तीसरी कसम

किंमत २५ पैसे

कथासार

—❋—

भोला भाला देहाती गाड़ीवान हीरामन और नौटंकी की एक्ट्रेस हीरबाई जीवन की राह में आ मिले एक दिन हीरा मन हीराबाई को फार्बिसगंज के मेले में ले जा रहा था तीस घंटे का सफर का समय उन्हें एक दुसरे के पास ले आया हीराबाई को जिंदगी में शायद पहली बार एक हीरा आदमी मिला जिसका मन गंगा के निर्मल पानी की तरह स्वच्छ था हीरामन ने शायद पहलीबार एक औरत को इतने नजदीक से देखा बात ही बात में सफर कट गया.

मेले में पहुंचकर हीराब ई ने हीरामन को अपनी नौटंकी देखने का बुलावा दे डाला हीरामन रोज तमाशा देखने पहुंचता हीराबाई रोज नए नए रुप में सजधज कर स्टेज की चकाचौंध में उतर के नाचती गाती रोज पर्दा खुलता और एक नया खेल शुरू होता.

हीरामन और हीराबाई को पता भीं नहीं चला की नौ-टंकी की इस दुनियां में पर्दे के पीछे एक और खेल शुरू हो गया और देखते ही देखते वे खुद तमाशा बन गये

आगे परदेदर देखिए

❋ शैलेंद्र प्रेझेंट ❋

डायरेक्टर–बासू भट्टाचार्य ▣ म्यु.–शंकर जयकिशन

कलाकार–राजकपूर, वहीदा रेहमान, दुलारी, इफ्तीखार

तीसरी कसम के गाने

१–मुकेश–सजन रे झूठ मत बोलो खुदा के पास जाना है
न हाथी है न घोडा है वहां पैदल ही जाना है
तुम्हारे महल ये चौबारे यहीं रह जायेंगे सारे
अकड किस बात की प्यारे ये सर फिर भी झुकाना है
सजनरे झूठ मत बोलो......
भला किजे भला होगा बुरा किजे बुरा होगा
वही लिख लिख क्या होगा
यहीं सबकुछ चुकाना है, सजन रे......
लडकपन खेलमें खोया जवानी निंद भर सोया
बुढापा देखकर रोया, वही किस्सा पुराना है, सजनरे

—शैलेंद्र

२–मुकेश–सजनव बैरी हो गए हमार
चिठिया हो तो हर कोई बाचे भाग न बाचे कोय
करमवा बैरी हो गए हमार
जाय बसे परदेश सजनवा सौतन को भरमाए
न संदेश न कोई खबरिया रूत आए रूत जाए
डूब गये हम बीच भवर में करके सोलह पार

सजनवा बैरी हो गये हमार...
सुनी सेज गोद मोरी सुनी भरम न जाने कोय
छटपट तडपे प्रीत बिचारी ममता आंसू रोय
न कोई इसपार हमार न उस पार
सजनवा बैरी हो गये हमार... —शैलेंद्र

मुकेश— ३

दुनियां बनाने वाले क्या तेरे मनमें समाई
काहे को दुनियां बनाई
तुने काह को दुनियां बनाई.....
काहे बनाये तुने माटी के पुतले
धरती ये प्यारी प्यारी सुखडे ये उजले
काहे बनाया तुने दुनियां का खेला जिसमे लगाया जवानी का
गुपचुप तमाशा दखे हरे तेरी खुदाई मेला
तुने काहे को दुनियां बनाई...
तु भी तो तडपा होगा मनको बनाके
तुफां य प्यारका दिल में छुपाके
कोई छबी होगी आंखों में तेरी
आंसू भी छलक होंगे पलको में तेरी
बोल क्या सुझी तुझको का प्रीत जगाई, तुने काहे...
प्रीत जगाके तुने जीना सिखाया
हंसना सिखाया रोना सिखाया

जीवन के पथपर मीत मिलाये मीत मिलाके तूने सपने जगाये
सपने बनाके तूने काहे को दे दी जुदाई
तूने काहे को दुनिया बनाई

—४— हसरत जयपुरी

चलत मुसाफिर मोहे लिया रे
पिंजडे वाली मुनिया...
उड उड बैठी हलवाईया दूकनिया
बरफी के सब रस ले लिया रे
पिंजडे वाली मुनिया
उड उड बैठी बजजवा दूकनिया
कपडा के सब रस ले लिया रे
पिंजडे वाली मुनिया
उड उड बैठी पनवडिया दूकनिया
पीडा के सब रस ले लिया रे
पिंजडे वाली मुनिया...

—५— शैलेंद्र

पान खाए सैयां हमारों.....
सांवली सूरतिया होठ लाल लाल
हाय हाय मलमल का कुर्ता
मलमल के कुर्ते प छीट लाल लाल
हमने मंगाई सुरमदानी ल आया जालिम बनारस का जर्दा

अपनी ही दुनियां में खोया रहे वो
हमारे जी को न पुछे बेदर्दी पान खाए ..
बगिया गुन २ पायल छुन २ चुपके से आई है रूत मतवाली
खिल गई कलियं दुनियां जाने लेकिन न जाने
बागिया का माली, पान खाए.. ...
खाके गिलोरी शामसे उंघ, सो जाए दिया बातीसे पहल
आंगन अंटारी मै घबराई डोलुं
चोरी के डरसे दिल मेरा दहल, पान खाए...

—६— -शैलेंद्र

मारे गये गुलफाम अजी हां मारे गये गुलफाम
उल्फत भी रास न आई अजी हां मारे गये गुलफाम
एक सब्ज परी देखी और दिल को गंवा बैठे
मस्तानी निगाहो पे फिर होश लुटा बैठे
काहे को मै मुस्कुराई, अजी हां मारे गये गुलफाम...
अबरू की कटारी से नैनों की दो धारी से
वह हाँके रहे जख्मी इक बादेबहारी से
ये जुल्फ क्या लहराई
अजी हां मारे गये गुलफाम ...
एक प्यार की महफिल मे. वो आए मुकाबिल में
वो तीर चले दिलपर हलचल सी हुई दिल में
चाहत की सजा पाई

अजी हां मारे गये गुलफाम -हसरत

—७—

हाय गजब कहीं तारा टुटा लुटा रे लुटा मेरे सैयांने लुटा
पहला तारा अटारिया पे टुटा
दांतो तले मैने दाबा अंगुठा
लुटा रे लुटा संवरिया ने लुटा
दुसरा तारा बजारेया में टुटा
देखा है सबने की मेला था लुटा
लुटा रे लुटा सिपहिया ने लुटा
तीसरा तारा फूल बगिया में लुटा
फुलों से पुछे कोई है कौन झुटा
लुटा रे लुटा दरोगा ने लुटा... -शैलेंद्र

—८—

लाली लाली डोलिया में लाली रे दुल्हानियां
पिया की प्यारी भोली भाली रे दुल्हानियां
मीठे २ बैन तीखे नैनों वाली रे दुल्हानियां
लौटेगी जो गोदी भर हमें न भुलाना
लडडु पेडे लाना अपने हाथों से खिलाना
तेरी सब रात हो दिवाली रे दुल्हानियां...
दुल्हे राजा रखना जतन से दुल्हन का
कभी न दुखाना तुम गोरिया के मनको

नाजुक है नाजों का पाली रे दुल्हनियां...
मन मुस्काए दोनों मुखडा छुपाए
भेद न खोले न तो बोले न बताए
जुग २ जिए जोडी मतवाली रे दुल्हनियां —शैलेंद्र

—९—

रहेगा इश्क तेरा खाक में मिलाके मुझे
हुए है इबतेदा में रंज इन्तेहा के मुझे
आ भी जा रात ढलने लगी
चांद छुपने चला शमा की तरह रातभर
तेरी याद म बखबर
जली आरजू दिल जला
सितारों मुंह फेरकर
कहा अलविदा हमसफर
चला कारवां अब चला
उफक पर खडी है सहर
अन्धेरा है दिलमें इधर
वही रोज का सिल सिला.....

प्रकाशक—एफ. बी. बुरहानपूरवाला सेंट्रल प्रकाशन
सिम्प्लेक्स बिल्डिंग पावबाला स्ट्रीट बंबई ४
मुद्रक—एस. के. खरगोनवाला
बाकीर प्रिंटिंग प्रेस मुझफराबाद हॉल ग्रांट रोड बंबई ७